आदमी और पहाड़

थोड़ी–सी ठंड क्या पड़ी,
सिहर उठा आदमी।
लेकिन
पहाड़ की छाती तो देखो,
हजारों वर्षों से ओढ़े लेटा है
बर्फ़ की मोटी चादर,
लेकिन कभी
उफ़ तक नहीं करता।□

रिश्तों के धागे

सुलझाता रहता है जंगल
नदी–नालों रूपी
रिश्तों के धागे,
लेकिन आकाश लांघकर
पहाड़ों की सीढ़ियां
पल–भर में
बढ़ जाता है आगे।□

जंगल में सूर्यास्त

बहुत नीचे उड़ रहा था
कोई सुनहला सारस।
ऊंचे–ऊंचे वृक्षों की
सघन टहनियों में फंस गया,
और देखते–ही–देखते
हरियाली के सागर में
दूर कहीं धंस गया।□